The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 7 | July 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

कला समेकित शिक्षण–अधिगम का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर प्रभाव का अध्ययन

अन्जू बघेल

शोध छात्रा (शिक्षाशास्त्र), आर.बी.एस. कॉलेज, आगरा एवं

डॉ. ललित मोहन शर्मा

प्रोफेसर (शिक्षा संकाय), आर.बी.एस. कॉलेज, आगरा

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.16880059

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 30-07-2025

Published: 10-08-2025

Keywords:

*कला समेकित शिक्षण–अधिगम, माध्यमिक के स्तर, विद्यार्थी, **उपलब्धि अभिप्रेरणा**।*

ABSTRACT

इस शोध प्रपत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर कला समेकित शिक्षण–अधिगम के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस शोध कार्य हेतु आगरा जिले के एक माध्यमिक विद्यालय का चयन किया और न्यादर्श के रूप में कक्षा 9 के कुल 60 विद्यार्थियों का चयन सोद्देश्य विधि से चयन किया गया। कला अभिव्यक्ति का एक माध्यम है, जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राएं विभिन्न प्रकार की रुचियां रखते हैं। कला को विभिन्न विषयों के साथ जोड़ने से न केवल उन्हें खुशी मिलती है, बल्कि अधिगमकर्ता को नवीन प्रकार के अनुभव भी प्राप्त होते हैं। कला समेकित शिक्षण–अधिगम शिक्षण का एक नवीन उपागम है, जिसके अंतर्गत कला, विषय और एक कला रूप के मध्य संयोजक के रूप में जुड़ती है और एक उत्तम समझ विकसित करती है। कला समेकित शिक्षण अधिगम अनुभवात्मक अधिगम हेतु एक सुस्पष्ट रूपरेखा प्रदान करता है। जहां छात्र अपनी रुचि के अनुसार विषय को सीखते हैं। इसमें छात्र कला समेकित उपागम से जुड़ते हैं और अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर अधिगम करते हैं और अपने ज्ञान में वृद्धि कर उच्च उपलब्धि हेतु प्रेरित होते हैं। शोध के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा में सार्थक अंतर है।

प्रस्तावना

बालक के सर्वांगीण विकास पर प्राचीनकाल से ही बल दिया जाता रहा है। आधुनिक समय में भी बालक के सर्वांगीण विकास हेतु सतत् प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए शिक्षक को प्रभावी शिक्षण करना होगा। कला एक ऐसा विषय है, जिसके द्वारा किसी भी विषय को रुचिकर बनाया जा सकता है। स्कूलों में कला शिक्षा क्यों ? एन. सी. एफ. 2005 में कहा गया है कि हमें अपनी अनूठी सांस्कृतिक पहचान को, उसकी विविधता और समृद्धता को बनाए रखना है तो औपचारिक शिक्षा में कला को महत्व देना होगा। शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा शिक्षण करके विद्यार्थियों की रुचियों के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए ताकि विद्यार्थियों की रुचियों को परिष्कृत किया जा सके। कला का समेकन विषय के साथ करने से छात्र अधिक प्रसन्नता के साथ विषयवस्तु की अवधारणा को समझता है और अधिक समय तक धारण करता है। वर्तमान समय में माध्यमिक स्तर की शिक्षा का विशेष महत्व है, जिसमें अधिगमकर्ता की विशेषताओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को विद्यालयों में एक सी भौतिक सुविधाएं शिक्षण, पाठ्यक्रम संरचना आदि समान होने पर भी विद्यार्थी विषय में रुचि नहीं लेते हैं। जिसका उनके शैक्षिक उपलब्धि एवं वैयक्तिक जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षा मानव जीवन के विकास का महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षा समाज में परिवर्तन व राष्ट्रीय चेतना लाने का कार्य करती है। यह विकास की गतिशील प्रक्रिया है। इसे चारदीवारी में बंद नहीं किया जा सकता। व्यक्ति की क्षमताओं को विकसित करने के लिए आवश्यक है कि उसकी रुचियों को विशिष्ट रूप से विकसित किया जाए। कला को जीवन का आधार माना जाता है। यदि कला को विषयवस्तु के साथ जोड़कर शिक्षण–अधिगम कराया जाए तो विद्यार्थियों की रुचियों को परिष्कृत किया जा सकता है। हेबरलिन 2017 ने अपने अध्ययन में कला के महत्व को उजागर किया। **तिवारी (डॉ.) के. के. (2020)–"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।"** परिणामों में शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में तीनों प्रकार के अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों एवं छात्राओं में विभिन्नता पाई गई है जबकि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में समानता पायी गयी।

कला समेमित शिक्षण–अधिगम एक अनुभवात्मक शिक्षण–अधिगम उपागम है, जो विद्यार्थियों को स्वयं सीखने के लिए प्रेरित करता है। छात्रों की रुचियों को अधिक परिष्कृत करने हेतु प्रभावी कला समेकित शिक्षण–अधिगम को अपनाने की आवश्यकता है, क्योंकि यह सीखने की प्रक्रिया को संचालित करने की एक केंद्रीय शक्ति के रूप में काम करती है, जिसका लक्ष्य विद्यार्थियों की सीखने की रुचि को विकसित कर उच्च उपलब्धि प्रेरणा हेतु प्रेरित करना है। इसका संबंध व्यक्ति की सफलता प्राप्त करने की इच्छा, प्रतिस्पर्धात्मक भावना, और श्रेष्ठता की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति से होता है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति के आधार पर उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु एकल समूह प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के चर

- **स्वतंत्र चर**–कला समेकित शिक्षण–अधिगम
- **आश्रित चर**–उपलब्धि प्रेरणा

अध्ययन की परिसीमाएं

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन को आगरा शहर तक सीमित रखा गया।
2. कक्षा 9 के 60 विद्यार्थियों तक सीमित किया गया।

न्यादर्श का चयन

शोध अध्ययन हेतु कक्षा 9 के 60 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

अध्ययन के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु प्रमापीकृत शोध उपकरण डॉ. टी. आर. शर्मा द्वारा निर्मित उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण किया गया है।

सांख्यिकीय विधि

प्रस्तुत शोध उपकरण से प्राप्त परिणामों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार मध्यमान, मानक विलचन और क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया।

उद्देश्य

कला समेकित शिक्षण–अधिगम का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

उपलब्धि परीक्षण प्रश्नावली के द्वारा संग्रहित पूर्व एवं पश्च परीक्षण के आंकड़ों का विश्लेषण निम्नलिखित प्रकार से किया गया है–

उपलब्धि प्रेरणा सम्बन्धित आंकड़ों का पूर्व व पश्च परीक्षण का आरेखीय निरूपण।

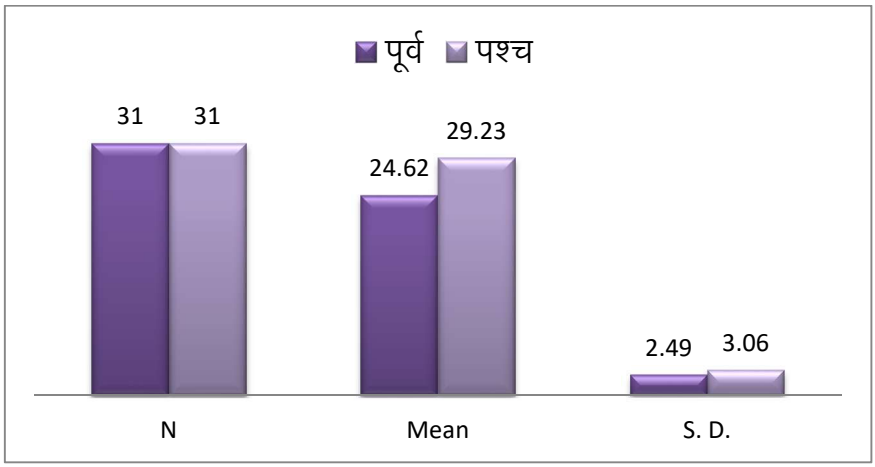

आरेख सं. 1.0 उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण के स्कोर का
पूर्व व पश्च परीक्षण का N, Mean, S.D.

तालिका सं. 1.0 उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण के स्कोर का पूर्व व पश्च परीक्षण का Mean, S.D. और t-value की गणना

स्वतंत्र चर	परीक्षण	N	Mean	S.D.	SEed	t-value	df	Sig (2 tailed)
उपलब्धि प्रेरणा	पूर्व	60	25.22	2.63	0.340	10.453	59	0.00
	पश्च	60	29.62	2.84	0.367			

उपर्युक्त तालिका संख्या 1.0 को देखने से स्पष्ट होता है कि उपलब्धि प्रेरणा प्रपत्रों के माध्यम से संग्रहित पूर्व परीक्षण पर कुल 60 विद्यार्थियों के स्कोर का मध्यमान 25.22 एवं S.D. 2.63 प्राप्त हुआ है तथा पश्च परीक्षण पर 60 विद्यार्थियों के स्कोर का मध्यमान 29.62 एवं S.D. 2.84 पाया गया, जोकि पूर्व परीक्षण के Mean एवं S.D. से अधिक है। पूर्व व पश्च समूहों के मध्य t.value का मान 10.453 तथा p-value का मान 0.00 पाया गया जोकि <0.05 पाया गया जो कि सार्थक पाया गया 0.05 सार्थकता स्तर पाया गया, जो प्रदर्शित करता है।

निष्कर्ष

अतः यह कहा जा सकता है कि कला समेकित शिक्षण–अधिगम का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रेरणा पर वास्तव में सार्थक प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- शर्मा, आर. ए. (1985), फंडामेंटल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, मेरठ, लॉयल डिपो।
- वर्मा, ए. (1996), भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (2005), एनसीईआरटी प्रकाशन, नई दिल्ली।
- कॉल, लोकेश (2010), मैथडोलॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, विकास प्रकाशन, नई दिल्ली।
- साखलकर, र. वि. (2014), आधुनिक चित्रकला का इतिहास, राजस्थान, हिंदी ग्रंथ अकादमी।

- हेबरलिन (2017), 'यूजिंग आर्ट बेस्ड रिसर्च टू एक्सप्लोर पीक एक्सपीरियंस इन फाइव गिफ्टिड चिल्ड्रन', इंटरनेशनल जनरल ऑफ एजुकेशन एंड आर्ट्स।
- सिंह, अरुण कुमार, शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पब्लिशर एंड डिस्टीब्यूटर।
- तिवारी (डॉ.) के. के. (2020)–"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।"